Vol 6 Issue 1 Feb 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
International Recognized Multidisciplinary Research Journal

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 1 | Feb - 2016

वैश्वीकरण एवं ग्रामीण व्यवस्था : एक अध्ययन

डॉ. मनोरमा चौहान
असिसटेण्ट प्रोफेसर ,ए हरदा डिग्री कॉलेज ,ए हरदा ,म.प्र

प्रस्तावना :

आज पुरी दुनिया में वैश्वीकरण, उदारीकरण, बाजार, व्यवस्था, आर्थिक सुधार, ढाँचागत समायोजन आदि नामों में से एक नई ''विश्वव्याख्याता के निर्माण का ''सघन अभियान चल रहा है। अमेरीकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व में एवं अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष की निगरानी के तहत बड़े सुनियोजित ढंग से लोगों को यह बताया जा रहा है कि तमाम मुसीबतों से छुटकारा इसी नई विश्वव्यवस्था के जरिये मिल सकता है और समाजवाद, आर्थिक समानता आदि गुजरें जमाने के घिसे पिटे शब्द भर रहे है।

वैश्वीकरण एक बहुआयामी खुली प्रक्रिया हैं। कुछ विचारक इसे एक आर्थिक अवधारणा मात्र समझते है। उनके लिए वैश्वीकरण उदारीकरण है, निजीकरण है और निवेश।

कुछ अन्य विचारक वैश्वीकरण का अर्थ सांस्कृतिक आदान–प्रदान के संदर्भ में निकालते है और कुछ की दृष्टि में वैश्वीकरण या भूमण्डलीकरण वह वृहद सामाजिक प्रक्रिया है जो संपूर्ण मानव जीवन को अपने अंदर समा लेती हैं आज भी अन्तराष्ट्रीय जगत में यह धारणा बनी हुई है कि कुछ राष्ट्र वैश्वीकरण के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्था व संस्कृति को थोपना चाहते है। ऐसे प्रभुत्वशाली राष्ट्र के लिए वैश्वीकरण एक उपयुक्त और अनुकूल प्रक्रिया है।

''सामान्य तौर पर वैश्वीकरण का अभिप्राय भूमण्डल के विभिन्न देशों के मध्य आर्थिक संबंधों को विकसित करने वाली प्रक्रिया है।''

एक विश्वव्यापी व्यापार विधा के रूप में वैश्वीकरण यद्यपि एक नवीन अवधारणा है। जड़े द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पाँच दशकों में निहित है। 1960 के दशक को समाज वैज्ञानिकों और नीति नियोजकों ने बुद्धिकाल के रूप में देखा। 1970 को आधुनिकीकरण, 1980 के दशक को सामाजिक रूपान्तरण और विकास, तथा 1990 के दशक को संवहनींय विकास के रूप में उल्लेखित किया और अंतः इस दशक के उत्तरार्द्ध अर्थात् बीसवीं सदी के समापन के दौर में उदारीकरण व निजीकरण पर विशेष बल देते हुए वैश्वीकरण का उद्घोष किया।

वैश्वीकरण के प्रमुख प्रेरक

वैश्वीकरण को आगे बढ़ाने वाले प्रमुख प्रेरक है–

1. बाजार की खोज
2. बहुराष्ट्रीय निवेश
3. प्रौद्योगिकी इलेक्ट्रानिक के नये उपकरण और कम्प्यूटर से जुड़ा विश्व सूचना संकुल ;

वैश्वीकरण का सर्वाधिक विरोधाभास का पहलु है, सामाजिक, आर्थिक विषमता, समानता, अन्याय, असुरक्षा जो विश्व समाजों की अर्थव्यवस्था, शासन तंत्र और समाज संरचना में व्यक्त है। औद्योगिक रूप से विकसित देश संपूर्ण विश्व जनसंख्या के 20 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते है और विश्व संसाधनों के 80 प्रतिशत पर नियंत्रण कायम रखे हुए है।

वैश्वीकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

विश्व के आर्थिक रंगमंच पर वैश्वीकरण व उदारीकरण की प्रक्रिया ने विश्व की आर्थिक विकास की काया पलट ही कर दी। भारत में वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप उत्पन्न इस नई अर्थव्यवस्था के प्रमुख सकारात्मक प्रभाव इस प्रकार है–

1. वैश्वीकरण व उदारीकरण ने भारत की राष्ट्रीयता व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की है।
2. आर्थिक विकास की उच्च दर प्राप्त करने के लिए घरेलू पूंजी निवेश बढ़ाने के में विदेशी पूंजी निवेश से काफी मदद मिली। इसके द्वारा केवल घरेलू उद्योग को ही लाभ नहीं पहुँचा वरन् उपभोक्ता को उन्नत व तकनीकी प्रबंध, कुशलता, मानव व प्रकृति संसाधनों का पूरा उपयोग भारतीय उद्योग को अन्तराष्ट्रीय स्तर का समान और सेवा जुटाने का लाभ भी प्राप्त हुआ है।
3. इसमें वैश्वीकरण और उदारीकरण का लाभ कृषि क्षेत्र में पहुँच रहा है। कृषि के क्षेत्र में नवीन तकनीकों के द्वारा खाद्यानों का उत्पादन बढ़ता जा रहा है।
4. आर्थिक क्षेत्र में वैश्वीकरण का तीव्र विकास हो रहा और इसका प्रभाव निर्धनता उन्मूलन पर भी पड़ा है।
5. यह वैश्वीकरण ही परिणाम है कि आज देश में परिवहन एवं संचार का क्षेत्र लगातार बढ़ता जा रहा है।
6. वैश्वीकरण के फलस्वरूप राष्ट्रीय एवं प्रति व्यक्ति आय सुधार हुआ है। फलस्वरूप देश में निर्धनता के अनुपात में धीरे–धीरे गिरावट आ रही है।
7. वैश्वीकरण का महत्वपूर्ण प्रभाव खासकर तकनीकी क्षेत्रों में प्रमुख रूप से पड़ा हैं
8. वैश्वीकरण के इस दौर में आज महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गई है। वे हर क्षेत्र में पुरूषों के साथ काम कर रही है।
9. वैश्वीकरण की प्रकृति स्वजातीयता या एकरूपता करने की है। यह प्रक्रिया जिस संस्कृति को समान रूप देती है वह एक जैसी जीवन पद्धति है।

वैश्वीकरण ने विश्वयुद्ध में उपयोग करने की बनावटी आवश्यकताओ को पैदा किया और आज जिस नये समाज का उदगम हो रहा है वह वस्तुतः उपयोगी समाज है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में वैश्वीकरण से उत्पन्न समस्याएँ

1. भारत में जब वैश्वीकरण का निर्णय लिया गया था उस समय अन्तराष्ट्रीय वातावरण भारत के बहुत अनुकूल नहीं था। अमेरिका ने भारत पर स्पेशल 301 धारा लागू करने की धमकी दे रखी थी। वह भारत पर बौद्धिक संपदा अधिकार संबंधी अवधारणा को स्वीकार करने के लिए दबाव डाल रहा था।
2. भारत अन्तराष्ट्रीय बाजार वस्तु प्रतियोगिता करने के लिए पूंजी की कमी का सामना कर रहा है।
3. भारत राजनैतिक अस्थिरता की समस्या से ग्रसित है जिसकी वजह कृषि, विद्युत तथा आधारभूत सामाजिक सेवाओं का विकास उचित गति से नहीं हो पा रहा है।
4. वैश्वीकरण हेतु हमने अपनी नई दिशाएं परिवर्तित कर ली परंतु स्वतंत्र बाजार की दिशा में गति बहुत धीमी है।
5. विदेशी सामानों के भारतीय बाजारों में आ जाने से घरेलू उद्योग धंधे प्रभावित हुए है। विदेशी माल की उच्च गुणवत्ता तथा सुविधा जनक दाम के कारण आम आदमी ने प्राथतिकता दी है।
6. जब देश में उद्योग धंधे कम होंगे तो रोजगार के अवसर भी घटेंगे और गरीबी में भी वृद्धि होगी। भारत में लगभग 36 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के अंदर जीवन यापन कर रहे है।
7. उदारीकरण की नीति के कारण सीमा शुल्क से होने वाली आय में कमी हुई और इसका प्रभाव यह हुआ कि विदेशी सामान अधिक मात्रा में कम मूल्य पर हमारे बाजारों में पहुँचने लगा है।
8. भारत में उदारीकरण की नीति के तहत विनिमय दर में निरंतर गिरावट देखी जा रही है जिससे विदेशी कर्ज का बोझ बड़ा है।

विगत वर्षों में वैश्वीकरण एवं आर्थिक सुधारों के भारत में मिला जुला प्रभाव रहा है जिससे हमारी ग्रामीण

अर्थव्यवस्था में कुछ सकारात्मक बदलाव आये है तो इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी सामने आये है। 1990 के दशक में विकास दर 6 प्रतिशत से ज्यादा नहीं रही जबकि 1950–60 व 1970 के दशक में औसतन यह दर 3 प्रतिशत रही। 1980 के दशक में विकास दर में वृद्धि शुरू हुई पर एक स्थायित्व एवं बेहतर स्थिति 1990 के दशक में बना। जो वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं आर्थिक सुधारों के नये प्रयोगों का दौर था। हमारी अर्थव्यस्था का पहला सकारात्मक प्रभाव था। आर्थिक सुधारों के क्रियान्वयन के परिणाम स्वरूप हमारा निर्यात बड़ा और राष्ट्र विकास दर में वृद्धि हुई। प्रगति के बावजूद कटु सत्य है कि आर्थिक सुधारों के फलस्वरूप इसका पूरे राष्ट्र पर एक जैसा नहीं पड़ा। जिन प्रदेशों की जनसंख्या कम थी जैसे पंजाब, महाराष्ट्र, हरियाण, तमिलनाडू आदि राज्य उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, उड़िसा, मध्य प्रदेश पहले तो उपेक्षा की वजह से पीछे जा रहे है। आर्थिक सुधारों का लाभ गरीबों तक नहीं पहुँचा है। यह चिंतनीय है कि समूची ग्रामीण अर्थव्यस्था इन सुधारों का असर सकारात्मक नहीं पड़ रहा है। अधिकाश राज्यों में जनसंख्या दर के साथ साक्षरता का ग्राफ उपर नहीं जा रहा है। स्वास्थ्य सुविधाएं हांसिल नहीं हो पा रही है। सबको पेयजल प्राप्त नहीं हो पा रहा है। अपना घर भारत की तीन चौथाई जनसंख्या के पास नहीं है। इतने वर्षों के बाद भी सभी गांवों को विद्युत उपलब्ध नहीं हो पा रही है और ना ही सड़कों का निर्माण कराया गया। साथ ही सड़कों का रखरखाव भी नहीं हो पा रहा है। पूरे विश्व में जहां कहीं आर्थिक सुधार लागू किये गये वहाँ सामाजिक विकास के कार्यों को बाजार से नहीं छोड़ा गया। सामाजिक विकास का दायित्व सरकारों का है, लेकिन हमारे यहां सरकार इस दायित्व को पूरा करने से मुंह मोड़ रही है और निजी क्षेत्रों की तरफ देखती जा रही है। आज भारत जिस स्थिति में है वहां करोड़ों लोगों के लिए रोजगार अस्तित्व का सवाल बना हुआ है। एकानामिस्ट 2001 के सर्वे में कई मामलों में अर्थव्यवस्था को समस्याओं की कमी पर हाथ रखने की कोशिश की है। निरंतर जीवन स्तर का भारत में बिहार उन सभी बातों का प्रतिनिधित्व करता है जो गड़बड़ी पैदा करते है। एकानामिस्ट का सर्वेक्षण उस खाई को उचित ही रेखांकित करता है जिसमें भारतीय अर्थव्यवस्था साफ तौर पर दिखती है कि ऐसा कह पाना मुश्किल है कि समुचे भारत का विकास हो पाया है। अंत में सर्वेक्षण में समाज के अंदर और क्षेत्रों के बीच बढ़ती विषमता पर रोशनी डाली है। उसके अनुसार धनी व्यक्ति और क्षेत्र पहले की अपेक्षा अधिक धनी होते जा रहे है। ऐसी स्थिति में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गरीब लोगों और गरीब क्षेत्रों में सुधार के प्रति सद्भाव होना मुश्किल है।

वैश्वीकरण के संबंध में सुझाव

भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में वैश्वीकरण के लिए निम्न सुझाव इस प्रकार है–

1. हमें अन्य देश भांति दीर्घकालीन कर नीति बनाना चाहिए।
2. प्रतियोगिता में बने रहने के लिए कम लागत व अच्छी किस्म पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
3. उद्यमों का अनुकूलतम आकार निर्धारित किया जाना चाहिए।
4. वित्तीय उदारीकरण में साख उपयोग व ब्याज दरों पर लगे नियंत्रणों को हटाना आवश्यक है।
5. सरकार को जनशक्ति के विवेकीकरण की स्पष्ट नीति बनानी चाहिए।
6. हमें चीन की तरह उदारीकरण का लाभ लेना है तो पहले हमें वित्तीय संयोजन और वित्तीय अनुशासन सुधारना चाहिए।

References:

1) Globalization and the international Financial system International Monetary Fund institute Washington DC 2005.

2) Thomas L Fridman (2008) Hot Flat and Crowded Allen lane England.

3) Jeffery Sochs (2005) The End of Poverty Penguin Book Landon.

4) Government of Tamil Nadu (2007) The Industrial Policy 2007.

5)M. Rahman (2013) Threts and opportunities of Globalization on Rural Development Thammasat University Bangkok.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org